"हीरे तो बहुत हैं बस जोहरी की तलाश हैं"

अवधेश कुमार श्रोत्रिय

क्रीड़ा अधिकारी, बिमटेक , ग्रेटर नॉएडा एवं सचिव प्ले इंडिया प्ले संस्था

Citation: - Shirotriya, A.K. (May, 2014). *हीरे तो बहुत हैं बस जोहरी की तलाश हैं.* Shiksha Shodh (ISSN -2348-3725), 1(5), 11.

खेल शब्द मस्तिष्क मे आते ही एक रोमांच एवं ऊर्जा का संचालन शरीर मे उत्पन्न होने लग जाता हैं, खेलना एक ऐसा अभूतपूर्व व रोमांचकारी पल होता हैं जिससे सभी नियमित रूप से सरोकार होना चाहते है ,पिछले एक दशक मे भारत में खेल एवं खेलो मे दी जाने वाली सुविधाओ मे सकारात्मक इज़ाफा हुआ हैं , कई अंतरराष्ट्रीय खेल महाकुंभो में भारत का प्रदशन अनुकरणीय एवं संतोषजनक रहा हैं , यह आने वाले वर्षो मे खेल एवं खिलाड़ियो के लिए बड़े ही गर्व का विषय हैं , 2012 ओलिंपिक के भारत के अब तक के सबसे बेहतर प्रदर्शन के बाद खेलो के विकास के लिए सकारात्मक कदम उठाए गये हैं/

समूचे भारत मे खेल प्रतिभाए कोने कोने मे छुपी हुई हैं, , बड़े बड़े शहरो के ट्रॅफिक सिग्नल्स पर, तथा रेल यात्रा मे सफ़र के दौरान हम अक्सर छोटे छोटे बच्चो को जिमनास्टिक जैसे कठिन खेल के कई आयाम प्रस्तुत करते हुए देखते हैं , वह बच्चे भारत के अमूल्य रत्न हैं किंतु उनका प्रदर्शन मात्र 1- 2 रूपए पाकर सिमट सा जाता हैं , स्वयम् मैने देल्ही के व्यस्त सिग्नल पर एक छोटे बच्चे को 05 रुपय देकर उसकी प्रतिभा का सम्मान किया हैं , उस बच्चे के लिए बेहतर जीवन और साथ ही साथ देश के जिमनास्टिक के लिए कुछ करने कि सोच ने मुझे उस बच्चे के माता पिता से बात करने पर मजबूर किया लेकिन उसके माता पिता ने उस बच्चे को अपनी आजीविका का सहायक बताते हुए मेरे प्रयास को विफल कर दिया/

देश मे चारो ओर बिखरे हुए प्रतिभा के लिए हमे ज़ोहरियो की तलाश हैं, जिस प्रकार हीरे कि चमक उस पर जोहरी के द्वारा मेहनत करने से आती हैं उसी प्रकार खेल प्रतिभाओ के लिए भी हमें अच्छे जौहरियों कि तलाश हैं, जो अच्छे से आभूषणो की तरह खेल की प्रतिभा को पोलिश करके विश्व स्तर पर भारत को ओलिंपिक जैसे प्रतिष्ठित मंच पर पदक तालिका मे प्रथम 05 की श्रेडी मे शुमार कर सके/

हर जगह खेलते हुए नौनिहालो को देखकर प्रतीत होता हैं कि खेल प्रतिभाए इधर उधर बिखरी हुई हैं , उनको एकत्रित करने का जिम्मा "जोहरियो" के हवाले कर देना चाहिए/ खेल संस्थानो के मुखियाओ की नैतिक रूप से यह ज़िम्मेदारी होनी चाहिए की हर जिले मे खेल प्रतिभाओ की तलाश करके उनको परिपक्व बनाकर देश के लिए तैयार करे...

सबसे बड़ी समस्या जो देश के सामने हीरो की परख मे आ रही हैं , वो मेरे विचार से खेल संघो के प्रमुख व्यक्तियो का स्वयं खेलो का खिलाड़ी ना होकर राजनैतिक खिलाड़ी होना हैं , कई खेल संघो के मुखिया बड़ी बड़ी पार्टियो के मंझे हुए राजनैतिक खिलाड़ी हैं, जिनका वास्ता मैदान से शायद उनके बाल्यकाल मे ही रहा होगा, ऐसे मुखिया वातानुकूलित कमरो में बैठकर कैसे खेलो के विकास मे भागीदार बनेगे यह एक ज्वलनशील मुद्दा देश के सामने हैं, उनकी आपसी राजनीति के चक्कर में कई खेल प्रतिभाए कोने में सिमट कर सिसक सिसक कर दम तोड़ रही हैं/

खेल संस्थाओ के प्रमुख का स्वयं खिलाड़ी होना खेलो के विकास के लिए संजीवनी बूटी का काम करेगा.."प्रमुख" व्यक्ति ही जोहरी कि भूमिका बखूभी अदा कर के खेल प्रतिभाओ को तलाश करके अंतर्राष्ट्रय स्तर के खेल मानचित्र पर भारत कि स्थति को प्रमुखता से दर्शायेगा /